शाला जल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम (SWSHE) का विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों की स्वच्छता संबंधी आदतों पर प्रभाव

जे. डी. सिंह*

स्वच्छ परिवेश प्रत्येक मुनष्य की मूलभूत आवश्यकता होती है। मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए आम लोगों में स्वयं स्वच्छ रहने एवं अपने परिवेश को स्वच्छ रखने की आदतों का विकास ज़रूरी है। स्वच्छ रहने की आदतों का विकास यदि बचपन से ही किया जाए, तो उसका सामुदायिक स्वास्थ्य पर सदैव सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इस हेतु समय-समय पर सरकार द्वारा स्वच्छता कार्यक्रम चलाए गए हैं। ग्रामीण समुदाय के लोगों की स्वच्छता के स्तर में सुधार लाने एवं महिलाओं को शौचालय सुविधाएँ प्रदान करने हेतु 1986 में केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम और 1999 में संपूर्ण स्वच्छता अभियान के अंतर्गत देश के कुछ चयनित जिलों में प्रायोगिक स्तर पर "शाला जल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम" की शुरुआत की गई, जिसे 2004 में राजस्थान के सभी प्रारंभिक विद्यालयों (Elementary Schools) में पूर्ण सक्रियता से लागू किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य राज्य में सभी विद्यालयों में पेयजल और स्वच्छता सुविधाओं की समुचित व्यवस्था करना, छात्र-छात्राओं में स्वच्छ रहने की आदतों का विकास कर ठहराव में वृद्धि करना और शैक्षिक उपलब्धियों में गुणात्मक सुधार करना था। उक्त कार्यक्रम से स्वच्छ एवं स्वस्थ विद्यालय वातावरण निर्माण तथा विद्यार्थियों में स्वच्छ आदतों की स्थिति जानने के लिए यह शोध अध्ययन किया गया है।

पृष्ठभूमि

बच्चे हमारे देश के भावी नागरिक हैं, जिन पर राष्ट्र के भविष्य का दायित्त्व है। इन्हें मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ रखकर ही स्वस्थ राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है। स्वस्थ रहने के लिए स्वयं स्वच्छ रहना एवं अपने परिवेश को स्वच्छ

* *प्रवक्ता,* ग्रामोत्थान विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय (सीटीई), संगरिया- 335063, जिला-हनुमानगढ़ (राज.)

4-Chapter.indd 38 6/17/2015 10:46:33 AM

रखना ज़रूरी है। स्वच्छ परिवेश प्रत्येक मुनष्य की मूलभूत आवश्यकता है। इस हेतु जन सामान्य में स्वच्छता की आदतों का होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ग्रामीण समुदाय के लोगों की स्वच्छता के स्तर में सुधार लाने एवं महिलाओं को शौचालय सुविधाएँ प्रदान करने हेतु केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम वर्ष 1986 में लागू किया गया था। **स्वच्छ रहने की आदत** का विकास यदि बचपन से ही किया जाए तो उसके सामुदायिक स्वास्थ्य पर सदैव सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

स्वच्छता की आदतों का विकास करने में विद्यालयों की अहम् भूमिका को ध्यान में रखकर ही भारत सरकार ने 1999 में संपूर्ण स्वच्छता अभियान के अंतर्गत देश के कुछ चयनित जिलों में प्रायोगिक स्तर पर *शाला जल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम (School Water Sanitation and Health Education– SWSHE)* की शुरुआत की। राजस्थान के चार जिलों यथा– **टोंक**, **अलवर**, **धौलपुर** और **झालावाड़** में प्रारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन से बच्चों व समुदाय में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से संबंधित आए परिवर्तनों के अध्ययन में काफी सकारात्मक पहलू उभर कर सामने आए। अतः भारत सरकार ने बच्चों में स्वच्छता व स्वास्थ की सही अवधारणा एवं आदतों का विकास करने के उद्देश्य से ''शाला जल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम'' को 2004 से राजस्थान के समस्त विद्यालयों में पूर्ण सक्रियता से लागू करने का निर्णय किया। विद्यालय जल, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम यूनिसेफ, भारत सरकार, राज्य सरकार और समुदाय के सहयोग से राजस्थान के सभी 33 जिलों में चलाया जा रहा है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों में स्वच्छता और सफाई की आदत विकसित करना और सभी विद्यालयों में पेयजल और स्वच्छता (Drinking Water and Sanitation) सुविधाओं की समुचित व्यवस्था करना है।

स्वच्छता के विभिन्न घटकों को ध्यान में रखते हुए शाला जल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत कुछ आसान गतिविधियों में समस्त विद्यालयों के शिक्षकों एवं छात्र–छात्राओं को स्वच्छता एवं स्वास्थ्यप्रद आदतों की जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गई है। विद्यालय के प्रधानाध्यापकों हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण, शिक्षकों हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं छात्र–छात्राओं हेतु दो दिवसीय प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। स्वच्छता एवं स्वास्थ्यप्रद आदतों की जानकारी देने के लिए सात घटक निम्न प्रकार हैं–

1. शुद्ध पेयजल एवं पेयजल स्रोतों का रखरखाव
2. गंदे पानी का निस्तारण
3. व्यक्तिगत स्वच्छता
4. घर व भोजन की स्वच्छता
5. मानव मल का निस्तारण
6. कचरे व गोबर का निस्तारण
7. गाँव की स्वच्छता

सामुदायिक अवधारणाओं के परिवर्तन में बच्चों की अहम् भूमिका होती है। सर्व शिक्षा अभियान का लक्ष्य 6 से 14 आयु वर्ग के समस्त बालक–बालिकाओं का सर्वांगीण विकास करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, जो बच्चों के बेहतर भविष्य और देश की प्रगति का अहम लक्ष्य माना गया है।

शोध का औचित्य

इस शाला जल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य कार्यक्रम को 2004 में शुरू करने के बाद सन् 2012 में 8 वर्ष से अधिक समय हो चुका है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी वातावरण को स्वच्छ व शुद्ध करना, छात्र-छात्राओं में स्वच्छतापूर्वक रहने की आदतों का विकास कर विद्यार्थियों के ठहराव में वृद्धि करना और शैक्षिक उपलब्धियों में गुणात्मक सुधार करना था। अत: अब यह उचित समय है, जब इस तथ्य का आकलन किया जाए कि उक्त कार्यक्रम से स्वच्छ एवं स्वस्थ विद्यालय वातावरण निर्माण का लक्ष्य किस स्तर तक प्राप्त किया जा सका है एवं विद्यार्थियों में स्वच्छतापूर्ण आदतों का स्वत: स्फूर्त विकास हुआ है या नहीं।

भारत के सबसे बड़े राज्य राजस्थान में (जिसका क्षेत्रफल देश का 10.4 प्रतिशत) देश की 5.50 प्रतिशत आबादी निवास करती है, परंतु जल की उपलब्धता केवल 1 प्रतिशत है। **जल जीवन है** तथा स्वच्छ जीवन जीने का तरीका। स्वस्थ एवं स्वच्छ जीवन जीने के लिए आधारभूत स्वच्छता आधारित सुविधाओं का होना आवश्यक है। विकासशील देशों में लगभग 100 करोड़ बच्चे स्वच्छतापूर्ण सुविधाओं के अभाव से संक्रमण, कुपोषण व मंद मानसिक और शारीरिक विकास से ग्रस्त हैं, जिनका सीधा प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक-आर्थिक स्तर पर पड़ता है। अच्छे स्वास्थ्य से बच्चों की सीखने-समझने की क्षमता का विकास होगा और वे बेहतर जीवन जीने योग्य बन सकेंगे। अत: इस शोध अध्ययन का औचित्य निम्न प्रकार से तर्क संगत होगा-

- राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के विद्यार्थियों में स्वास्थ्य संबंधी आदतों के बारे में अध्ययन करना रोचक व नवीन है। शिक्षा की गुणवत्ता की वृद्धि के लिए ऐसे शोध कार्य की महत्ता हैं, क्योंकि राज्य सरकार व अन्य अभिकरण स्कूल योजना निर्माण में शोध कार्य की उपलब्धि से लाभान्वित हो सकेंगे। प्राथमिक स्तर, विद्यार्थियों के जीवन में उसी तरह महत्त्वपूर्ण है, जिस तरह एक मकान के लिए उसकी नींव। अत: इस आयु में अच्छी स्वस्थ आदतों को विकसित किया जाएगा तो राष्ट्र के लिए अच्छे नागरिकों का निर्माण होगा।
- शोधकर्त्ता के विचार में वर्तमान पर्यावरण प्रदूषण व इससे संबंधित बीमारियों का प्रमुख कारण स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता और जानकारी का अभाव है। यदि शिक्षा की प्रारंभिक अवस्था को सही दिग्दर्शित नहीं किया गया, तो नि:सन्देह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व स्वास्थ्य की नींव कमज़ोर होगी। प्राथमिक स्तर पर स्कूलों में स्वास्थ्य व स्वच्छता संबंधी मूल्यों का विकास कितना हुआ है व इसके लिए क्या और प्रयास स्कूल, समुदाय व सरकार की ओर से किए जाने चाहिए यह जानना नितांत आवश्यक समझा गया है। यदि यह विकास अपेक्षित नहीं है तो इसके कारण क्या हैं? अत: इस शोध कार्य द्वारा व्यक्तिगत स्वच्छता व स्वास्थ्य के प्रति रुचि तथा जानकारी उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है।

इन्हीं उपर्युक्त बिंदुओं तथा प्रश्नों के बारे में जानने में गहन उत्सुकता होने के कारण शोधकर्त्ता ने प्रस्तुत समस्या **'शाला जल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम का विद्यालय वातावरण एवं विद्यार्थियों की स्वच्छता**

सम्बन्धी आदतों पर प्रभाव' का चयन किया है, जिससे प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के स्वच्छता आदत निर्माण के संबंध में ठोस कदम उठाये जा सकें।

शोध के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन में निम्नांकित उद्देश्यों की पूर्ति को लक्षित किया गया–

1. स्वेश (SWSHE) कार्यक्रम का बालक–बालिकाओं की स्वच्छ आदतों पर होने वाले प्रभाव को जानना।
2. राजकीय प्रा./उच्च प्रा. विद्यालयों में पेयजल सुविधा/शौचालयों/मूत्रालयों की वस्तुस्थिति का पता लगाना।
3. स्वेश कार्यक्रम का विद्यालय के नामांकन एवं ठहराव से संबंध का पता लगाना।
4. स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्द्धक वातावरण निर्माण में बाधक तत्वों का पता लगाना।
5. शाला स्वच्छता वातावरण में अतिरिक्त सुधार एवं स्वच्छता अभिवृद्धि हेतु सुझाव देना।

शोध विधि

इस शोध कार्य में उद्देश्यों की प्रकृति के अनुरूप प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्वच्छ आदतों का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध उपकरणों के द्वारा संग्रहित दत्तों के विश्लेषण में विवरणात्मक सांख्यिकी (Descriptive statistics) प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण

शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य की विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए निम्नांकित स्वः निर्मित उपकरण प्रयुक्त किए गए–

1. दत्त अनुसूची (नामांकन/ठहराव/भौतिक सुविधाओं की स्थिति जानने हेतु)
2. प्रश्नावली (शिक्षकों, अभिभावकों व विद्यार्थियों हेतु)
3. साक्षात्कार (एसएमसी सदस्यों व शिक्षकों हेतु)
4. अवलोकन अनुसूची (विद्यालय वातावरण जानने हेतु)

न्यादर्श

इस शोध हेतु हनुमानगढ़ जिले के प्राथमिक विद्यालयों से संबंधित विद्यार्थी, समाज व विद्यालयी तंत्र को जनसंख्या के रूप मे निर्धारित किया गया है। शोध संबंधी समंकों के एकत्रीकरण एवं संग्रहण हेतु न्यादर्श का चयन अग्रांकित प्रकार से किया गया–

क्र.सं.	*तहसील का नाम*	*न्यादर्श प्रा. वि./उ. प्रा. वि.*		*अभिभावक*	*अध्यापक/ प्रधानाध्यापक प्रा.वि.*	*स्थानीय प्रशासन एवं अन्य*
		विद्यालय	*विद्यार्थी*			
1	हनुमानगढ़	10	100	20	20	
2	पीलीबंगा	10	100	20	20	
3	संगरिया	10	100	20	20	

4	टिब्बी	10	100	20	20	25
5	रावतसर	10	100	20	20	
6	नोहर	10	100	20	20	
7	भादरा	10	100	20	20	
योग		70	700	140	140	

शोध परिसीमन

इस शोध कार्य को अधिक वैध और विश्वसनीय बनाने के लिए क्षेत्र तथा न्यादर्श संबंधी परिसीमन निम्न प्रकार किया गया–

1. इस शोध कार्य हेतु राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों को लिया गया।
2. इस शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श का चुनाव यादृच्छिक प्रतिचयन विधि (Random Sampling Method) द्वारा किया गया।

मुख्य निष्कर्ष

विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा दिए गए मतों के आधार पर उद्देश्यानुसार प्राप्त मुख्य शोध निष्कर्ष अग्रलिखित हैं–

(अ) विद्यार्थियों के मतानुसार निष्कर्ष–

1. करीब 87 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया है कि 'वे प्रतिदिन उठते ही कुल्ला करते हैं।'
2. 74.00 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'वे सुबह उठकर स्वच्छ पानी से आँखों को धोते हैं।'
3. करीब 97 प्रतिशत बालक–बालिकाओं ने बताया है कि 'वे अपने निवास–कक्ष को स्वच्छ रखते हैं।'
4. 74.00 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'अपने घर में शौचालय को साफ़ सुथरा रखा जाता है।'
5. करीब 51 प्रतिशत बच्चों ने बताया है कि 'वे मटके से पानी निकालने के लिए डंडे वाले लोटे का उपयोग करते हैं।'
6. 94.42 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'वे पीने का पानी ढक कर रखते हैं।'
7. 68.85 प्रतिशत बालक–बालिकाओं ने बताया है कि 'वे अपने घर में खाना–खाने से पहले साबुन से हाथ धोते हैं।'
8. 92.42 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि वे बाज़ार से खाद्य वस्तुएँ खरीदने में स्वच्छता का ध्यान रखते हैं।
9. 76.85 प्रतिशत छात्र–छात्राओं ने बताया है कि 'वे विद्यालय में भोजन लेने से पहले साबुन से हाथ धोते हैं।'
10. 95.42 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'वे कोई संक्रामक रोग फैलने पर रोकथाम निर्देशों की अनुपालना करते हैं।'
11. करीब 69 प्रतिशत बालक–बालिकाओं ने बताया है कि 'वे अपने विद्यालय में अस्वच्छ बैंच को स्वयं साफ़ करके बैठते हैं।'
12. 95.85 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'वे स्वच्छ स्रोत से ही पानी पीते हैं।'

13. 93.15 प्रतिशत छात्र-छात्राओं ने बताया है कि 'वे विद्यालय में स्वच्छ वेशभूषा पहनकर जाते हैं।'
14. 85.42 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'वे मोज़े व जूते साफ़ सुथरे रखते हैं।'
15. 53.57 प्रतिशत बालक-बालिकाओं ने बताया है कि 'वे स्वयं अल्पाहार लेने से पहले साबुन से हाथ धोते हैं।'
16. 56.42 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'उनको विद्यालय में अध्यापक स्वच्छता संबधी निर्देश नियमित रूप से देते हैं।'
17. 88.42 प्रतिशत बालक-बालिकाओं ने बताया है कि 'वे अध्यापक के निर्देशानुसार नाखून काटकर विद्यालय में जाते हैं।'
18. 77.15 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'विद्यालय में शौचालयों को साफ़ सुथरा रखा जाता है।'
19. 83.58 प्रतिशत बालक-बालिकाओं ने बताया है कि 'वे अपने विद्यालय में शौच आदि के लिए शौचालय का ही उपयोग करते हैं।'
20. 82.85 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'शौचालय उपयोग के बाद हाथ साबुन से धोते हैं।'
21. 85.85 प्रतिशत छात्र-छात्राओं ने बताया है कि 'वे शौचालय स्वच्छता संबधी निर्देशों की अनुपालना करते हैं।'
22. 30.42 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'विद्यालय में पीने का पानी कई दिनों के लिए संग्रहित करके रखा जाता है।'
23. 98.58 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'वे भोजन साफ़-सुथरी जगह पर करते हैं।'
24. 92.15 प्रतिशत बालक-बालिकाओं ने बताया है कि 'वे विद्यालय में स्वच्छता संबंधित निर्देशों का नियमित रूप से पालन करते हैं।'
25. 29.72 प्रतिशत छात्र-छात्राओं ने बताया है कि 'उनको स्वच्छता रखने हेतु दो दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।'
26. 90.14 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा है कि 'वे विद्यालय से बाहर भी स्वच्छता संबधी निर्देशों की अनुपालना करते हैं।'
27. 93.28 प्रतिशत छात्र-छात्राओं ने बताया है कि 'वे सार्वजनिक स्थल पर खेलते समय स्वच्छता का पूरा ध्यान रखते हैं।'

(ब) अध्यापकों के मतानुसार निष्कर्ष-

1. 62.15 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि 'विद्यार्थी प्रतिदिन स्नान करके विद्यालय आते हैं।'
2. 86.42 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि 'छात्र-छात्राएँ नियमित रूप से कंघी करते हैं।'
3. करीब 81.42 प्रतिशत अध्यापकों के मतानुसार 'विद्यार्थी विद्यालय में स्वच्छ वेशभूषा पहनकर आते हैं।'
4. 86.42 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि 'विद्यार्थी मोज़े व जूते साफ़ रखते हैं।'
5. 63.57 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि 'विद्यार्थी कक्षा में स्कूल बैग को व्यवस्थित रखते हैं।'
6. 65.00 प्रतिशत अध्यापकों के मतानुसार 'संक्रामक बीमारी फ़ैलने पर रोकथाम के लिए दिए गए निर्देशों का विद्यार्थी पालन करते हैं।'

7. 96.42 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि 'चिकित्सक द्वारा छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य की नियमित जाँच कराई जाती है।'
8. 93.57 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि 'विद्यार्थी स्वास्थ्य जाँच शिविरों में स्वच्छता संबधी निर्देशों की अनुपालना करते हैं।'
9. शत-प्रतिशत अध्यापकों के मतानुसार 'छात्र-छात्राओं को खान-पान संबंधी अच्छी आदतों को अपनी दिनचर्या में सम्मिलित करना चाहिए।'
10. 87.14 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि 'अपने विद्यालयों में शौचालयों की स्वच्छ व समुचित व्यवस्था है।'
11. 97.85 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि 'विद्यालय में विद्यार्थी शौच आदि के लिए शौचालय का उपयोग करते हैं।'
12. 90.72 प्रतिशत अध्यापकों के मतानुसार 'शौचालय के उपयोग के बाद विद्यार्थी साबुन से हाथ धोते हैं।'
13. शत-प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि 'विद्यार्थी स्वच्छ स्त्रोत से पानी पीते हैं।'
14. 3.58 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि 'विद्यालय में पीने का पानी कई दिनों के लिए संग्रहित करके रखा जाता है।'
15. 87.85 प्रतिशत अध्यापकों के मतानुसार 'अपने विद्यालय में पर्याप्त व शुद्ध पेयजल की सुविधा है।'
16. 91.43 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि 'विद्यार्थी साफ़-सुथरी जगह पर बैठकर भोजन करते हैं।'
17. 91.43 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि 'पोषाहार लेने से पहले विद्यार्थी साबुन से हाथ धोते हैं।'
18. 92.15 प्रतिशत अध्यापकों के मतानुसार 'विद्यार्थी पोषाहार ग्रहण करने हेतु स्वच्छ बरतन का उपयोग करते हैं।'
19. 92.15 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि 'विद्यालय में पोषाहार लेने के तुरन्त बाद बरतनों को साफ़ किया जाता हैं।'
20. 86.43 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि 'विद्यालय में स्वच्छता आदत विकसित करने के लिए भाषण प्रतियोगिता व प्रशिक्षण आदि का आयोजन होता है।'
21. 74.29 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि 'विद्यार्थियों को सेनिटेशन किट का उपयोग करना बताया गया।'
22. 55.00 प्रतिशत अध्यापकों के मतानुसार 'अध्यापकों को स्वच्छता रखने हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।'
22. 8.58 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि 'खेलते-खेलते ज्यादा प्यास लगने पर विद्यार्थी किसी भी जल-स्त्रोत से पानी-पी लेते हैं।'
23. 64.28 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि 'खेल-मैदान में अल्पाहार लेने से पहले साबुन से हाथ धोते हैं।'
24. 94.28 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि 'अल्पाहार, केले आदि के छिलके कचरा-पात्र में डालते हैं।'

(स) अभिभावकों के मतानुसार निष्कर्ष-

1. 79.28 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया है कि हमारे बच्चे प्रतिदिन उठते ही कुल्ला करते हैं।

2. 64.28 प्रतिशत अभिभावकों ने कहा है कि 'हमारे बच्चे सुबह उठकर स्वच्छ पानी से आँखें धोते हैं।'
3. 55.71 प्रतिशत अभिभावकों के मतानुसार 'प्रतिदिन सूर्योदय से पहले हमारे बच्चे उठ जाते हैं।'
4. 65.72 प्रतिशत अभिभावकों ने कहा है कि 'हमारे बच्चे अपने अध्ययन-कक्ष को व्यवस्थित रखते हैं।'
5. करीब 85 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया है कि 'हमारे बच्चों के अध्ययन-कक्ष का वातावरण दमघोटू नहीं है।'
6. 65.00 प्रतिशत अभिभावकों ने कहा है कि 'हमारे बच्चे विद्यालय में नियमित स्नान करके जाते हैं।'
7. करीब 97.00 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया है कि 'हमारे बच्चे विद्यालय में स्वच्छ वेशभूषा पहनकर जाते हैं।'
8. 72.15 प्रतिशत अभिभावकों ने कहा है कि 'हमारे बच्चे मोज़े व जूते साफ़ रखते हैं।'
9. 85.15 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया कि 'बच्चे अपने निवास-कक्ष को स्वच्छ रखते हैं।'
10. 91.44 प्रतिशत अभिभावकों ने कहा है कि 'हमारे घर में शौचालय को साफ़-सुथरा रखा जाता है।'
11. 67 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया कि 'शौच आदि के लिए हमारे बच्चे शौचालय का ही उपयोग करते हैं।'
12. 67 प्रतिशत अभिभावकों के मतानुसार 'शौचालय के उपयोग के बाद बच्चे साबुन से हाथ धोते हैं।'
13. 62.86 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया कि 'बच्चे शौचालय स्वच्छता संबधी निर्देशों की अनुपालना करते हैं।'
14. 85.71 प्रतिशत अभिभावकों ने कहा है कि 'बच्चे मटके को अर्थात् पीने के पानी हमेशा ढक कर रखते हैं।'
15. 39.28 प्रतिशत अभिभावकों के मतानुसार 'घर में पीने का पानी कई दिनों के लिए संग्रहित रखा जाता है।'
16. 56.42 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया कि 'सामाजिक उत्सवों में भी हमारे बच्चे स्वच्छता के प्रति जागरुक रहते हैं।'

(द) भौतिक सुविधाओं की वस्तुस्थिति

1. भादरा, रावतसर और टिब्बी क्षेत्र में 20 प्रतिशत कक्षा-कक्षों की कमी पाई गयी। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार संपूर्ण जिले में करीब 15 प्रतिशत कक्षा-कक्षों की कमी पाई गयी।
2. कुछ जगहों को छोड़कर पूरे जिले में पीने के पानी की सुविधा पर्याप्त पाई गयी।
3. पूरे जिले में केवल 6 प्रतिशत विद्यालयों में शौचालयों/मूत्रालयों की सुविधा पर्याप्त नहीं पाई गयी।
4. 12 प्रतिशत विद्यालयों में साबुन, तेल, नेल कटर आदि की सुविधा पर्याप्त नहीं पाई गयी।
5. प्राप्त आंकड़ों के अनुसार संपूर्ण जिले में करीब 55 प्रतिशत राजकीय प्रा./उच्च प्राथमिक विद्यालयों में खेल मैदान की सुविधा नहीं पाई गयी। जिसकी कमी बच्चों के सर्वांगीण विकास में

प्रमुख बाधक तत्व के रूप में सामने आई है।

(य) स्वेश कार्यक्रम के बाद विद्यालय में विद्यार्थियों का ठहराव -

सभी तहसीलों की ठहराव की स्थिति को देखने के बाद पता चलता है कि सत्र 2003-04 में बालकों का कुल ठहराव 50.51 प्रतिशत व बालिकाओं का ठहराव 70.58 प्रतिशत प्राप्त हुआ है और बालक-बालिकाओं का औसत ठहराव 60.34 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार सत्र 2009-10 में पूरे जिलें में बालकों का ठहराव 45.36 प्रतिशत और बालिकाओं का ठहराव 51.00 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। और बालक-बालिकाओं का औसत ठहराव 48.18 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। अत: इन आंकड़ों को देखने से ज्ञात होता है कि शाला जल-स्वच्छता शिक्षा कार्यक्रम के बाद जिले में बालक-बालिकाओं के ठहराव में 12.16 प्रतिशत की कमी पाई गयी, जो सोच-विचारने का विषय है।

(र) स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्धक वातावरण निर्माण में बाधक तत्व-

बच्चों के स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्धक वातावरण निर्माण में निम्नांकित तत्व बाधक पाए गए–

1. बच्चों व अभिभावकों में घर की स्वच्छता के प्रति उदासीन होना।
2. स्वच्छता संबंधी आदतों के प्रति जागरुकता का अभाव होना।
3. स्वेश कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार कम होना।

(ल) शाला वातावरण में अतिरिक्त सुधार व स्वच्छता अभिवृद्धि हेतु सुझाव –

विद्यालय वातावरण में अतिरिक्त सुधार एवं स्वच्छता अभिवृद्धि हेतु निम्नांकित मुख्य बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए-

1. बच्चों के माध्यम से अभिभावकों व समुदाय तक स्वच्छता के संदेश के प्रसारण को प्रोत्साहित करना।
2. स्वच्छता संबंधी आदतों के प्रति जागरुकता पैदा करना एवं स्वेश कार्यक्रम की लोकप्रियता में अभिवृद्धि का प्रयास करना।

शोध अध्ययन का प्रभाव

इस अध्ययन का विशेषत: बालक-बालिकाओं, अध्यापकों, प्रशासकों, अभिभावकों, स्वास्थ्य विभाग व अन्य स्वयं सेवी संस्थाओं के कर्मचारियों पर अग्रांकित प्रभाव हो सकेगा-

(अ) विद्यार्थी वर्ग पर प्रभाव

इस अध्ययन के माध्यम से प्रारंभिक विद्यालयी विद्यार्थियों में व्यक्तिगत तथा सामुदायिक स्वच्छता की आदत व भावना का विकास हो सकेगा। इसके अतिरिक्त अध्ययन से उन तथ्यों की पहचान हुई है, जो बच्चों में अच्छी स्वच्छता संबंधित आदतों के निर्माण को बाधित कर रहे हैं। अत: उन्हें दूर किया जा सकेगा।

(ब) अध्यापक वर्ग पर प्रभाव

इस अधययन से अध्यापक वर्ग को स्वयं में भी स्वच्छता संबंधी आदतों के निर्माण की जानकारी हो सकेगी और स्वच्छता कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों का दृष्टिकोण व्यापक हो सकेगा। विद्यार्थियों में प्रारंभ से ही अच्छी आदतों के निर्माण से संकीर्ण विचारधारा का अंत हो सकेगा और अध्यापक जान सकेंगे कि औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ अच्छी स्वच्छता संबंधी आदतें भी व्यक्तित्व निर्माण का एक अहम हिस्सा है।

(स) शिक्षा प्रशासकों पर प्रभाव

इस शोधकार्य द्वारा शिक्षा प्रशासकों का ध्यान भी स्वच्छता संबंधी आदतों के निर्माण की उपयोगिता की ओर आकर्षित किया जा सकेगा। शोध के परिणाम से राजकीय विद्यालयों में शाला जल-स्वच्छता एवं स्वास्थ्य कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु कार्य शैली में उपयोगी सुधार के सुझाव दिए जा सकेंगे एवं उन बाधक तत्वों की पहचान कर उनके निराकरण के उपाय सुझाए जा सकेंगे।

(द) अभिभावकों पर प्रभाव

घर बालक की प्रथम पाठशाला है, जहाँ बच्चे अधिकांश आदतें अनुकरण के द्वारा सीखते हैं। यह शोधकार्य स्वयं अभिभावकों में तथा अपने बच्चों में अच्छी आदतें विकसित करने के संबंध में सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने में सहायक हो सकेगा।

(य) स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों पर प्रभाव

इस शोधकार्य के द्वारा स्वास्थ्य विभाग व अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं के कर्मचारी स्वच्छता के अभाव में होने वाली बीमारियों की रोकथाम के लिए जागरुक हो सकेंगे और वे लक्षित उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति सुनिश्चित कर सकेंगे।

जीवन को सरल व अधिक खुशहाल बनाने के लिए आवश्यक है कि बच्चों में शुरू से ही अच्छी आदतों का बीजारोपण किया जाए। इसके लिए ही स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों का बाल्यावस्था से ही विकास किए जाने के उद्देश्य से ही शाला जल, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम को संपूर्ण देश में लागू किया गया। अत: विद्यालयों से प्रारम्भ होने वाली अच्छी आदतें कालांतर में सामाजिक उन्नयन का आधार बनेंगी और सामुदायिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक हो सकेंगी।

संदर्भ

गोपालन, सी. 1989. *स्टडी ऑफ़ द करंट स्टेटस एंड रेलीवेंस ऑफ़ कम्युनिटी न्युट्रीशन्स एंड हेल्थ प्रोग्राम्स थ्रू द हेल्थ केयर सिस्टम.* इन्डीपेन्डेन्ट स्टडी. न्युट्रीशन फाउन्डेशन ऑफ़ इंडिया. नयी दिल्ली.

बुच, एम. बी. (एड.). 1986. *थर्ड सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन,* वॉल्युम 1 एन्ड 2, न्यु दिल्ली.

भारत सरकार. 2003. *टूऑर्ड्स टोटल सेनीटेशन एंड हाइजीन – ए चेलेंज फॉर इंडिया,* कन्ट्री पेपर सीरीज़, नयी दिल्ली.

_____. (एमएचआरडी). *नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन-1986, पीऑए-1990,* नयी दिल्ली.

_____. स्कूल वॉटर सप्लाई, सेनीटेशन एंड हेल्थ रिलेटेड एजुकेशन – इंडिया, *मिनिस्ट्री ऑफ़ रूरल डवलपमेंट,* डिपार्टमेंट ऑफ़ ड्रिंकिंग वॉटर सप्लाई.

युनीसेफ़. 1998. *ए मैनुअल ऑन स्कूल सेनिटेशन एडं हाईजीन, वाटर, एन्वाइरन्मेंट एंड टेक्नीकल गाईडलाइन सीरीज़-5,* न्यूयॉर्क.

_____. 2001. *रिपॉर्ट ऑन नेशनल वर्कशॉप ऑन स्कूल वॉटर एंड सेनीटेशन टूऑर्ड्स हेल्थ एंड हाइजीन,* इंडिया कन्ट्री ऑफ़िस.

राजपूत, जे. एस. 1990. *यूनिवर्सलाइज़ेशन ऑफ़ एलीमेंटरी एजुकेशन – रोल ऑफ़ टीचर एजुकेशन.* विकास पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली.

स्कूल वॉटर सेनीटेशन एंड हाइजीन एजुकेशन प्रोग्राम (एस.डब्ल्यु.एस.एच.ई.), डिस्ट्रीक्ट प्लॉन ऑफ़ एक्शन, 2005. *डिस्ट्रीक्ट प्राइमरी एजुकेशन प्रोग्राम एंड सर्व शिक्षा अभियान,* श्रीगंगानगर.